सूरह — एक कहानी

सूरह अन-नज्म

सितारा

पूरा सफ़र — मेराज की रात, और कोशिश का क़ानून —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 53 • 62 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वन्-नज्मि इज़ा हवा। मा ज़ल्ल साहिबुकुम व मा ग़वा
1-2. सितारे की क़सम जब वो गिरे। तुम्हारा साथी न भटका न बहका।

व मा यन्तिक़ु 'अनिल्-हवा। इन हुव इल्ला वह्युंय्-यूहा
3-4. और वो अपनी ख़्वाहिश से नहीं बोलता। ये तो बस एक वही है जो उतारी जाती है।

व अल्-ला तज़िरु वाज़िरतुंव्-विज़्र उख़्रा
38. और ये कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।

व अल्-लैस लिल्-इंसानि इल्ला मा स'आ
39. और ये कि इंसान के लिए वही है जिसकी उसने कोशिश की।

व अन्नहू हुव अज़्हक व अब्का
43. और ये कि वही हँसाता है और रुलाता है।

फ़स्जुदू लिल्लाहि व'बुदू
62. तो अल्लाह को सजदा करो और उसी की इबादत करो।

वो ख़्वाहिश से नहीं बोलता

बेटा, ये सूरह एक क़सम से खुलती है और फिर उस शख़्स के बारे में पूरे क़ुरआन के सब से अहम एलानों में से एक करती है जो इसे ले कर आए।

'वन्-नज्मि इज़ा हवा — **सितारे** की क़सम जब वो **गिरे**।' उलमा ने 'नज्म' को सितारों के डूबने से समझाया, और कुछ ने इसे ख़ुद क़ुरआन से जोड़ा, जो टुकड़ों में उतरा — क्योंकि 'नुजूम' उन चीज़ों के लिए इस्तेमाल होता है जो क़िस्तों में आती हैं।

'मा ज़ल्ल साहिबुकुम व मा ग़वा — **तुम्हारा साथी** न **भटका**, न **बहका**।'

बेटा, लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए: '**साहिबुकुम**' — तुम्हारा साथी। 'नबी' नहीं, 'ये आदमी' नहीं। अल्लाह उन्हें उन्हीं लोगों का साथी कहते हैं जो उनका इनकार कर रहे हैं — वो आदमी जिसके बग़ल में वो चालीस साल जिए, जिसके किरदार को उन्होंने हर मामले में जाँचा।

'ज़ल्ल' का मतलब जहालत से रास्ता खोना; 'ग़वा' का मतलब ख़्वाहिश की पैरवी से ग़लत होना। दोनों का इनकार किया गया — **वो न उलझे हुए हैं न बिगड़े हुए।**

और फिर, बेटा, वो आयत जो पूरी सुन्नत का इख़्तियार क़ायम करती है: '**व मा यन्तिक़ु 'अनिल्-हवा** — न वो **ख़्वाहिश** से **बोलता** है — **इन हुव इल्ला वह्युंय्-यूहा** — ये तो सिर्फ़ एक **वही** है जो उतारी जाती है।'

इस पर ठहरिए। इस दीन के मामले में आप ﷺ ने जो भी पहुँचाया वो उनकी अपनी पसंद से पैदा नहीं हुआ। **वो उतरा।** और इसी लिए सुन्नत क़ुरआन का कोई इख़्तियारी ज़मीमा नहीं — इसे ठीक इसी आयत से एक महफ़ूज़ कलाम के तौर पर समझाया जाता है।

अब्दुल्लाह इब्ने 'अम्र (रज़ि0) जो कुछ नबी ﷺ से सुनते उसे लिख लेते थे। कुछ क़ुरैश ने ए'तिराज़ किया: तुम हर चीज़ लिखते हो, और वो एक इंसान है जो ग़ुस्से और ख़ुशी में बोलता है। उन्होंने ये नबी ﷺ से ज़िक्र किया, जिन्होंने अपने मुँह की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया: '**लिखो।** उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, इस से **सच** के सिवा कुछ नहीं निकलता।'

'अल्लमहू शदीदुल्-क़ुवा — उसे एक **सख़्त क़ुव्वत वाले** ने **सिखाया**' — ये जिब्रील (अलैहि0) को उनकी असली शक्ल में बयान करता है। नबी ﷺ ने उन्हें दो बार उनकी असली सूरत में देखा, और आपने हमें बताया कि जिब्रील के **छह सौ पर** थे, उफ़ुक़ भरे हुए। 'सुम्म दना फ़-तदल्ला — फिर वो **क़रीब** आया और **नीचे** उतरा — फ़-कान क़ाब क़ौसैनि औ अद्ना — यहाँ तक कि **दो कमानों की दूरी** पर था, या **क़रीब तर**।' बेटा, ऐसी क़ुर्बत जिसे ज़ुबान नापने में लड़खड़ाती है।

सिद्रतुल-मुंतहा की बेरी

और अब, बेटा, सूरह हमें **अल-इसरा वल-मेराज** की रात पर ले जाती है — किसी इंसान का किया हुआ सब से अज़ीम सफ़र।

'व लक़द र-आहु नज़्लतन उख़्रा — और उसने उसे एक और बार **उतरते** हुए देखा

— **'इंद सिद्रतिल्-मुंतहा** — **सिद्रतुल-मुंतहा** के पास — 'इंदहा जन्नतुल्-म'वा — उसी के पास ठिकाने वाली जन्नत है।'

बेटा, 'सिद्रह' बेरी का दरख़्त है और 'मुंतहा' का मतलब है **इंतिहा, आख़िरी हद।** नबी ﷺ ने बताया कि ये वो हद है जहाँ तक ऊपर जाने वाली हर चीज़ पहुँचती है और जहाँ से नीचे आने वाली हर चीज़ शुरू होती है — मख़लूक़ के इल्म की आख़िरी सरहद।

'इज़ यग़शस्-सिद्रत मा यग़शा — जब उस बेरी को **ढाँप** रहा था जो ढाँप रहा था।' अल्लाह ने ये नहीं बताया कि क्या ढाँप रहा था — क्योंकि उस मंज़र के लिए अल्फ़ाज़ हैं ही नहीं। नबी ﷺ ने फ़रमाया कि उस पर सोने के परवाने छाए हुए थे, और उसके पत्ते हाथी के कानों जैसे थे।

और अब, बेटा, इस पूरी दास्तान की सब से क़ीमती आयत — **अदब का सबक़**: '**मा ज़ाग़ल्-बसरु व मा तग़ा** — **निगाह न भटकी, और न हद से आगे बढ़ी।**'

सोचिए। कायनात का सब से हैरत-अंगेज़ मंज़र सामने है, और नबी ﷺ की आँख न इधर-उधर भटकी और न जो देखने की इजाज़त थी उससे आगे झाँका। **वो देखा जो दिखाया गया, बिल्कुल उतना ही।**

बेटा, यही अदब का असल पैमाना है। हमारी आँखें उन जगहों पर भटकती हैं जहाँ जाना नहीं चाहिए, और हमारे ज़ेहन उन सवालों में घुसते हैं जिनका इल्म हमें दिया ही नहीं गया। और आप ﷺ, आसमानों में — **ठीक उतना ही देखा जितना देना था।**

'लक़द र-आ मिन आयाति रब्बिहिल्-कुब्रा — बेशक उसने अपने रब की **सब से बड़ी निशानियाँ** देखीं।'

तीन बुत, और दो इंजन

फिर सूरह अचानक आसमानों से उतर कर मक्का की गलियों में आ जाती है, और उन तीन बुतों का नाम लेती है जिन्हें क़ुरैश पूजते थे: '**अ फ़-र-अयतुमुल्-लात वल्-'उज़्ज़ा। व मनातस्-सालिसतल्-उख़्रा** — भला बताओ लात और 'उज़्ज़ा, और तीसरी, मनात?'

और फिर एक तंज़ जो उनके पूरे निज़ाम को गिरा देता है: '**अ लकुमुज़्-ज़करु व लहुल्-उन्सा** — क्या तुम्हारे लिए **बेटे** और उसके लिए **बेटियाँ**? **तिल्क इज़न क़िस्मतुन ज़ीज़ा** — ये तो बड़ी **बे-इंसाफ़ी** वाली तक़सीम है!'

बेटा, उनका तज़ाद पकड़िए: वो बेटी की पैदाइश पर शर्मिंदा होते थे और उसे ज़िंदा गाड़ देते थे — और फिर अपने बुतों को 'अल्लाह की बेटियाँ' कहते थे। **जो चीज़ अपने लिए बुरी समझते थे, वो अल्लाह की तरफ़ मंसूब करते थे।**

'इन हिय इल्ला अस्मा-उन सम्मैतुमूहा अन्तुम व आबाउकुम — ये तो बस **नाम** हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादों ने रख लिए — **मा अन्ज़लल्लाहु बिहा मिन सुल्तान** — अल्लाह ने इनके लिए कोई **दलील** नहीं उतारी।'

और फिर अल्लाह हर झूटे अक़ीदे के **दो इंजन** का नाम लेते हैं: '**इंय्-यत्तबिऊन इल्लज़्-ज़न्न व मा तह्वल्-अन्फ़ुस** — वो सिर्फ़ **गुमान** की पैरवी करते हैं और उसकी जो **नफ़्स चाहते** हैं।'

बेटा, इसे याद रखिए, क्योंकि ये आज भी बिल्कुल वैसा ही है: **विरासत में मिला अंदाज़ा (सब यही करते आए हैं) और ज़ाती ख़्वाहिश (मैं यही चाहता हूँ)।** हर बातिल इन्हीं दो पहियों पर चलता है।

'व लक़द जा-अहुम मिर्-रब्बिहिमुल्-हुदा — हालाँकि उनके पास उनके रब की तरफ़ से **हिदायत** आ चुकी है।'

कोशिश का क़ानून

और अब, बेटा, इस सूरह का सब से बड़ा ख़ज़ाना आता है — चंद आयतें जिन्हें उलमा ने इब्राहीम और मूसा (अलैहिमुस्सलाम) के सहीफ़ों का ख़ुलासा कहा:

'**व अल्-ला तज़िरु वाज़िरतुंव्-विज़्र उख़्रा** — और ये कि **कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।**'

बेटा, ये आयत एक पूरी दुनिया के अक़ाइद गिरा देती है। कोई किसी और के गुनाह के साथ पैदा नहीं होता। कोई बाप का जुर्म बेटे के खाते में नहीं जाता। और कोई किसी

दूसरे की नेकी के सहारे भी नहीं बच सकता। **हर जान अकेली खड़ी होगी।**

'**व अल्-लैस लिल्-इंसानि इल्ला मा स'आ** — और ये कि **इंसान के लिए वही है जिसकी उसने कोशिश की।**'

इस पर ग़ौर कीजिए, बेटा — क्योंकि यहाँ अल्लाह ने 'नतीजा' नहीं कहा, '**स'य**' कहा — **कोशिश।** आप अपने नतीजों के मालिक नहीं हैं; आप अपनी कोशिश के मालिक हैं। वो दावत जो किसी ने क़ुबूल न की, वो दुआ जो अभी तक पूरी नहीं हुई, वो मेहनत जो किसी ने देखी नहीं — **सब लिखी जा चुकी।**

और ये कितनी बड़ी राहत है: दुनिया आपको नतीजों से नापती है, और अल्लाह आपको **कोशिश** से।

'**व अन्न स'यहू सौफ़ युरा** — और ये कि उसकी कोशिश **अनक़रीब देखी जाएगी** — **सुम्म युज्ज़ाहुल्-जज़ा-अल्-औफ़ा** — फिर उसे उसका **पूरा पूरा बदला** दिया जाएगा।'

बेटा, 'सौफ़ युरा' — दिखाई जाएगी। सिर्फ़ गिनी नहीं, **दिखाई** जाएगी — आपके सामने रख दी जाएगी। और बदला 'औफ़ा' होगा — पूरा, कमी के बग़ैर।

'**व अन्न इला रब्बिकल्-मुंतहा** — और ये कि आपके रब ही पर **इंतिहा** है।' हर रास्ता, हर सवाल, हर सफ़र — सब वहीं ख़त्म होता है।

वही हँसाता है और वही रुलाता है

फिर आयतों का एक ऐसा सिलसिला आता है जो आपकी पूरी ज़िंदगी की व्याख्या कर देता है — और हर एक 'व अन्नहू हुव' से शुरू होती है, 'और ये कि **वही** है':

'**व अन्नहू हुव अज़्हक व अब्का** — और ये कि **वही हँसाता है और वही रुलाता है।**'

बेटा, इस पर ठहरिए। हँसी भी उसकी तरफ़ से, और आँसू भी उसी की तरफ़ से। हम अक्सर ख़ुशी को अपनी होशियारी समझते हैं और ग़म को बद-क़िस्मती। **दोनों एक

ही हाथ से आते हैं।** जो शख़्स इसे सचाई से मान ले, वो न कामयाबी पर फूलता है न नाकामी पर टूटता है।

'**व अन्नहू हुव अमात व अह्या** — और ये कि वही **मारता** है और वही **ज़िंदा** करता है।'

'**व अन्नहू हुव अग़ना व अक़्ना** — और ये कि वही **ग़नी** करता है और वही **क़नाअत** देता है।'

बेटा, उस आख़िरी जोड़े को ग़ौर से देखिए — 'अग़ना व अक़्ना'। वो दौलत देता है, **और** वो उस पर राज़ामंदी देता है। ये **दो अलग तोहफ़े** हैं। बहुत से लोग पहला दूसरे के बग़ैर पाते हैं — और वो ज़मीन के सब से ग़रीब लोग हैं: भरे हुए खाते और ख़ाली सीने।

उससे दोनों माँगिए। माल भी, और उस पर सुकून भी।

तो सजदा करो और इबादत करो

और सूरह अपने इख़्तिताम की तरफ़ उन क़ौमों का नाम ले कर बढ़ती है जो तबाह की गईं: 'उसने पहली 'आद को तबाह किया, और समूद को, और उन्हें न छोड़ा — और उस से पहले नूह की क़ौम को — बेशक वो ज़्यादा **ज़ालिम** और ज़्यादा **सरकश** थे — और उलटी हुई बस्तियों को उसने दे पटख़ा।'

फिर तंबीह: '**हाज़ा नज़ीरुम्-मिनन्-नुज़ुरिल्-ऊला** — ये एक **डराने वाला** है **पहले डराने वालों** जैसा।' वही पैग़ाम, वही रहमत, वही तरीक़ा।

'**अज़िफ़तिल्-आज़िफ़ह** — क़रीब आने वाला (दिन) **क़रीब आ गया** — **लैस लहा मिन दूनिल्लाहि काशिफ़ह** — अल्लाह के सिवा कोई उसे **हटा** नहीं सकता।'

और फिर, बेटा, तीन आयतें किताब की दलील बंद करने को — और वो सीधे दिल पर लगती हैं:

'**अ फ़-मिन हाज़ल्-हदीसि त'जबून** — क्या तुम इस बात पर **हैरान** होते हो — **व तज़्हकून व ला तब्कून** — और **हँसते** हो, और **रोते** नहीं — **व अन्तुम सामिदून** — जब कि तुम **सामिदून** हो' — अपने आप को मशग़ूल करते, ग़ाफ़िल, खेल में, बे-ख़बर?

बेटा, इन सवालों में उदासी महसूस कीजिए। वुजूद की सब से बड़ी ख़बर सुनाई जा रही है — वो दिन, हिसाब, मंज़िल — और जवाब **हँसी और तफ़रीह** है।

और क्या ये ठीक हमारी हालत नहीं? नसीहत चलती है, और हम स्क्रॉल करते हैं। ख़ुत्बा दिया जाता है, और हम अपनी दोपहर का मंसूबा बनाते हैं। मौत किसी जानने वाले को ले जाती है, और एक दिन के अंदर हम फिर तफ़रीह में होते हैं।

'व तज़्हकून व ला तब्कून' — तुम हँसते हो और रोते नहीं। बेटा, आप आख़िरी बार कब अल्लाह के ख़ौफ़ या मोहब्बत से रोए? नबी ﷺ ने फ़रमाया **दो आँखें आग को न छुएँगी**: एक आँख जो अल्लाह के ख़ौफ़ से रोई, और एक आँख जो उसकी राह में पहरा देती रही।

और फिर, सूरह की आख़िरी आयत — और ये **सजदे की आयत** है: '**फ़स्जुदू लिल्लाहि व'बुदू** — **तो अल्लाह को सजदा करो और उसी की इबादत करो।**'

बेटा, ये उस सब का जवाब है जो सूरह ने कहा। 'तो इसके बारे में सोचो' नहीं, 'तो इस पर बहस करो' नहीं — **नीचे जाओ।** अपनी पेशानी ज़मीन पर रखो।

और इस आयत की तारीख़ अजीब है। सहीह अल-बुख़ारी में आता है कि नबी ﷺ ने का'बा पर सूरह अन-नज्म पढ़ी और उसके आख़िर में सजदा किया — और **वहाँ मौजूद हर शख़्स ने उनके साथ सजदा किया, मोमिन और बुत-परस्त दोनों।** तिलावत की ताक़त ऐसी थी कि मुनकिर तक ख़ुद को ज़मीन पर पाए।

बेटा, तो ये सूरह एक **सितारे के उतरने** से शुरू होती है और **इंसानी पेशानियों के उतरने** पर ख़त्म होती है। सब से ऊँचे आसमान से सब से आजिज़ हालत तक। और उनके दरमियान का पूरा रास्ता एक लाइन में समेटा हुआ है जिसे आपको कभी भूलना नहीं चाहिए: **'लैस लिल-इंसानि इल्ला मा स'आ'** — इंसान के लिए उसके

सिवा कुछ नहीं जिसकी उसने कोशिश की।

तो कोशिश करो, बेटा। और फिर सजदा करो।

इस सूरह से क्या सीखा

1. 'वो ख़्वाहिश से नहीं बोलता' — सुन्नत एक महफ़ूज़ कलाम है, कोई इख़्तियारी मशवरा नहीं।

2. सिद्रतुल-मुंतहा पर उनकी निगाह से अदब सीखिए: वो न भटकी न हद से आगे गई।

3. हर झूटा अक़ीदा दो इंजन पर चलता है — विरासत में मिला अंदाज़ा, और ज़ाती ख़्वाहिश।

4. कोई दूसरे का बोझ नहीं उठाता: गुनाह विरासत में नहीं मिलता, और न ही नेकी।

5. आप अपनी **कोशिश** के मालिक हैं, अपने नतीजों के नहीं — और आपकी कोशिश दिखाई और पूरी अदा की जाएगी।

6. वही हँसाता और रुलाता है, ग़नी करता और राज़ी करता है — उस से दौलत **और** राज़ामंदी दोनों माँगिए, क्योंकि वो दो तोहफ़े हैं।

7. 'सामिदून' में से मत बनिए — नसीहत के बीच हँसते हुए; कभी रो लिया कीजिए, और फिर सजदा कीजिए।

या अल्लाह, हमारी कोशिश क़ुबूल कीजिए, हमें वो आँसू अता कीजिए जो हमें बचाएँ, और हमारी पेशानियों को अक्सर ज़मीन से मिलने दीजिए। आमीन।